विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत 16 सितम्बर 2020

वर्ग षष्ठ राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

षष्ठः पाठः

पुनर्मूषको भव

शब्दार्थ याद करें।

इतस्ततः	आधर - उधर	मत्वा	मानकर
इत्यवगम्य	ऐसा समझकर	कदाचित्	किसी समय
विभेति	डरता है	बलिष्ठो	बलवान्
अथ	इसके बाद	अनुधावन्	पीछे दौडता हुआ
एकदा	एक बार	जातकारूण्येन	करूणा उत्पन्न होने पर
खादितुम्	खाने के लिए	दृष्टः	देखा
ततः	उसके बाद	मूषकशावक	चूहे का बच्चा
भ्रष्टः	गिरा हुआ	उटजद्वारे	कुटिया के द्वार पर
विन्ध्याटव्याम्	विन्ध्य नामक जंगल में		

आसीत् पुरा विन्ध्याटव्यां महातपा नाम मुनिः।

तेन एकदा उटजद्वारे काकमुखाद् भ्रष्टो मुषकशावको दृष्टः।

ततो जातकारूण्येन तेन मुनिना सा नीवारकणैः परिवर्धितः।

एकदा तं मूषकं खादितुमनुधावन कश्चित् विडालो मुनिना दृष्टः।